टिप्पणी

9

चीफ़ की दावत

(भीष्म साहनी)

आप दावतों में शामिल हुए होंगे और घर पर भी दावतें आयोजित की होंगी। इनके पीछे कोई-न-कोई उद्देश्य अवश्य होता है। 'चीफ़ की दावत' कहानी भी एक दावत की घटना पर आधारित है जिसके माध्यम से नगरों में रह रहे मध्यमवर्गीय परिवारों में तेज़ी से उन्नति करने की लालसा, अवसरवादिता, स्वार्थपूर्ति के लिए पारिवारिक संबंधों की आत्मीयता को ताक पर रखने की प्रवृत्तियाँ उजागर हुई हैं।

आइए, इस परिप्रेक्ष्य पर आधारित कहानी को विस्तार से पढ़ते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- मध्यवर्गीय लोगों में पारिवारिक संस्कारों के विघटन का उल्लेख कर सकेंगे;
- लोगों में बढ़ रही स्वार्थपरता और अवसरवाद की प्रवृत्ति का उल्लेख कर सकेंगे;
- कहानी की प्रासंगिकता की पहचान कर अपने शब्दों में व्यक्त कर सकेंगे;
- कहानी के तत्त्वों के आधार पर पाठ की व्याख्या कर सकेंगे;
- कहानी की विशेषताओं को अभिव्यक्त कर सकेंगे।

क्रियाकलाप 9.1

- आप अपने आस-पास ऐसे वृद्ध लोगों को देखते होंगे जो परिवार में रहते हुए भी अकेलेपन से ग्रस्त रहते हैं। ऐसे किसी वृद्ध व्यक्ति के बारे में लगभग 100 शब्दों में विचार प्रकट कीजिए।

9.1 मूल पाठ

चीफ़ की दावत

आज मिस्टर शामनाथ के घर चीफ़ की दावत थी।

शामनाथ और उनकी धर्मपत्नी को पसीना पोंछने की फुर्सत न थी। पत्नी ड्रैसिंग गाउन पहने, उलझे हुए बालों का जूड़ा बनाए, मुँह पर फैली हुई सुर्खी और पाउडर को भूले, और मिस्टर शामनाथ सिगरेट-पर-सिगरेट फूँकते हुए, चीज़ों की फेहरिस्त हाथ में थामे, एक कमरे से दूसरे कमरे में आ-जा रहे थे।

आखिर पाँच बजते-बजते तैयारी मुकम्मल होने लगी। कुर्सियाँ, मेज, तिपाइयाँ, नैपकिन, फूल, सब बरामदे में पहुँच गए। ड्रिंक का इंतज़ाम बैठक में कर दिया गया। अब घर का फालतू सामान आलमारियों के पीछे और पलँगों के नीचे छिपाया जाने लगा। तभी शामनाथ के सामने सहसा एक अड़चन खड़ी हो गई, माँ का क्या होगा?

इस बात की ओर न उनका और न उनकी कुशल गृहिणी का ध्यान गया था। मिस्टर शामनाथ, श्रीमती की ओर घूमकर अंग्रेजी में बोले- ''माँ का क्या होगा?''

श्रीमती काम करते-करते ठहर गईं, और थोड़ी देर तक सोचने के बाद बोलीं, ''इन्हें पिछवाड़े इनकी सहेली के घर भेज दो। रात-भर बेशक वहीं रहें। कल आ जाएँ।''

शामनाथ सिगरेट मुँह में रखे, सिकुड़ी आँखों से श्रीमती के चेहरे की ओर देखते हुए पल-भर सोचते रहे, फिर सिर हिलाकर बोले, '' नहीं मैं नहीं चाहता कि उस बुढ़िया का आना-जाना यहाँ फिर से शुरू हो। पहले ही बड़ी मुश्किल से बंद किया था। माँ से कहें कि जल्दी ही खाना खाके शाम को ही अपनी कोठरी में चली जाएँ। मेहमान कहीं आठ बजे आयेंगे। इससे पहले ही अपने काम से निबट लें।''

सुझाव ठीक था। दोनों को पसंद आया। मगर फिर सहसा श्रीमती बोल उठीं, ''जो वह सो गयीं और नींद में खर्राटे लेने लगीं तो? साथ ही तो बरामदा है, जहाँ लोग खाना खायेंगे।''

''तो इन्हें कह देंगे कि अंदर से दरवाज़ा बंद कर लें। मैं बाहर से ताला लगा दूँगा। या माँ को कह देता हूँ कि अंदर जाकर सोयें नहीं, बैठी रहें, और क्या?''

''और जो सो गयीं तो? डिनर का क्या मालूम कब तक चले। ग्यारह-ग्यारह बजे तक तो तुम ड्रिंक ही करते रहते हो।''

शामनाथ कुछ खीज उठे, हाथ झटकते हुए बोले, ''अच्छी-भली यह भाई के पास जा रही थीं।

तुमने यूँ ही खुद अच्छा बनने के लिए बीच में टाँग अड़ा दी।''

''वाह ! तुम माँ और बेटे की बातों में मैं क्यों बुरी बनूँ ? तुम जानो और वह जानें।''

मिस्टर शामनाथ चुप रहे। यह मौका बहस का न था, समस्या का हल ढूँढने का था। उन्होंने घूमकर माँ की कोठरी की ओर देखा। कोठरी का दरवाज़ा बरामदे में खुलता था। बरामदे की ओर देखते हुए झट-से बोले, ''मैंने सोच लिया है,'' और उन्हीं कदमों से माँ की कोठरी के बाहर जा खड़े हुए। माँ दीवार के साथ एक चौकी पर बैठी, दुपट्टे में मुँह-सिर लपेटे, माला जप रही थीं। सुबह से तैयारी होती देखते हुए माँ का भी दिल धड़क रहा था। बेटे के दफ्तर का बड़ा साहब घर पर आ रहा है, सारा काम सुभीते से चल जाय।

''माँ, आज तुम खाना जल्दी खा लेना। मेहमान लोग साढ़े सात बजे आ जायेंगे।''

माँ ने धीरे-से मुँह पर से दुपट्टा हटाया और बेटे को देखते हुए कहा, ''आज मुझे खाना नहीं खाना है, बेटा, तुम जानते तो हो, माँस-मछली बने, तो मैं कुछ नहीं खाती।''

''जैसे भी हो, अपने काम से जल्दी निबट लेना।''

''अच्छा बेटा!''

''और माँ, हम लोग पहले बैठक में बैठेंगे। उतनी देर तुम यहाँ बरामदे में बैठना। फिर जब हम यहाँ आ जायें, तो तुम गुसलखाने के रास्ते बैठक में चली जाना।''

माँ अवाक् बेटे का चेहरा देखने लगीं। फिर धीरे-से बोली, ''अच्छा बेटा।''

''और माँ, आज जल्दी सो नहीं जाना। तुम्हारे खर्राटों की आवाज़ दूर तक जाती है।''

माँ लज्जित-सी आवाज में बोलीं, ''क्या करूँ बेटा, मेरे बस की बात नहीं है। जब से बीमारी से उठी हूँ, नाक से साँस नहीं ले सकती।''

मिस्टर शामनाथ ने इंतज़ाम तो कर दिया, फिर भी उनकी उधेड़-बुन खत्म नहीं हुई। जो चीफ़ अचानक उधार आ निकला तो ? आठ-दस मेहमान होंगे, देसी अफसर, उनकी स्त्रियाँ होंगी, कोई भी गुसलखाने की तरफ जा सकता है। क्षोभ और क्रोध में वह फिर झुँझलाने लगे। एक कुर्सी को उठाकर बरामदे में कोठरी के बाहर रखते हुए बोले, आओ माँ, इस पर ज़रा बैठो तो।

माँ माला सँभालती, पल्ला ठीक करती उठीं, और धीरे-से कुर्सी पर आकर बैठ गयीं।

''यूँ नहीं, माँ, टाँगें ऊपर चढ़ाकर नहीं बैठते। यह खाट नहीं है।''

माँ ने टाँगें नीचे उतार लीं।

''और खुदा के वास्ते नंगे पाँव नहीं घूमना। न ही वह खड़ाऊँ पहनकर सामने आना। किसी दिन तुम्हारी वह खड़ाऊँ उठाकर मैं बाहर फेंक दूँगा।''

माँ चुप रहीं।

''कपड़े कौन-से पहनोगी माँ?''

''जो हैं, वही पहनूँगी बेटा ! जो कहो, पहन लूँ।

मिस्टर शामनाथ सिगरेट मुँह में रखे, फिर अधखुली आँखों से माँ की ओर देखने लगे, और माँ के कपड़ों की सोचने लगे। शामनाथ हर बात में तरतीब चाहते थे। घर का सब संचालन उनके अपने हाथ में था। खूँटियाँ कमरों में कहाँ लगायी जायँ, बिस्तर कहाँ पर बिछें, किस रंग के पर्दे लगाये जायें, श्रीमती कौन-सी साड़ी पहनें, मेज किस साइज़ की हो .... शामनाथ को चिंता थी कि अगर चीफ़ का साक्षात् माँ से हो गया, तो कहीं लज्जित नहीं होना पड़े। माँ को सिर से पाँव तक देखते हुए बोले, ''तुम सफ़ेद कमीज़ और सफ़ेद सलवार पहन लो माँ। पहन के आओ तो, जरा देखूँ।''

माँ धीरे-से उठीं और अपनी कोठरी में कपड़े पहनने चली गयीं।

''यह माँ का झमेला ही रहेगा,'' उन्होंने फिर अंग्रेज़ी में अपनी स्त्री से कहा, कोई ढंग की बात हो, तो भी कोई कहे। अगर कहीं कोई उल्टी-सीधी बात हो गयी, चीफ़ को बुरा लगा, तो सारा मज़ा जाता रहेगा।''

माँ सफ़ेद कमीज़ और सफ़ेद सलवार पहनकर बाहर निकलीं। छोटा-सा कद, सफ़ेद कपड़ों में लिपटा, छोटा-सा सूखा हुआ शरीर, धुंधली आँखें, केवल सिर के आधे झड़े हुए बाल पल्ले की ओट में छिप पाये थे। पहले से कुछ ही कम कुरूप नजर आ रही थीं।

''चलो ठीक है। कोई चूड़ियाँ-वूड़ियाँ हों, तो वह भी पहन लो। कोई हर्ज नहीं।''

''चूड़ियाँ कहाँ से लाऊँ बेटा ? तुम तो जानते हो, सब ज़ेवर तुम्हारी पढ़ाई में बिक गये।''

यह वाक्य शामनाथ को तीर की तरह लगा। तिनककर बोला, ''यह कौन-सा राग छेड़ दिया, माँ ! सीधा कह दो, नहीं हैं ज़ेवर, बस ! इससे पढ़ाई-वढ़ाई का क्या तकल्लुक है? जो जेवर बिका, तो कुछ बनकर ही आया हैं, निरा लँडूरा तो नहीं लौट आया। जितना दिया था, उससे दुगना ले लेना।''

''मेरी जीभ जल जाए बेटा, तुमसे ज़ेवर लूँगी ? मेरे मुँह से यूँ ही निकल गया। जो होते तो लाख बार पहनती !''

साढ़े पाँच बज चुके थे। अभी मिस्टर शामनाथ को खुद भी नहा-धोकर तैयार होना था। श्रीमती कब की अपने कमरे में जा चुकी थीं। शामनाथ जाते ही एक बार फिर माँ को हिदायत करते गये, ''माँ, रोज की तरह गुमसुम बन के नहीं बैठी रहना। अगर साहब इधर आ निकलें और कोई बात पूछें, तो ठीक तरह से बात का जवाब देना।''

''मैं न पढ़ी, न लिखी, बेटा, मैं क्या बात करूँगी। तुम कह देना, माँ अनपढ़ है, कुछ जानती-समझती नहीं। वह नहीं पूछेगा।''

सात बजते-बजते माँ का दिल धक्-धक् करने लगा। अगर चीफ़ सामने आ गया और उसने

कुछ पूछा, तो वह क्या जवाब देंगी। अंग्रेज़ को तो दूर से ही देखकर वह घबरा उठती थीं, यह तो अमरीकी है। न मालूम क्या पूछे। मैं क्या कहूँगी। माँ का जी चाहा कि चुपचाप पिछवाड़े विधवा सहेली के घर चली जायँ। मगर बेटे के हुक्म को कैसे टाल सकती थीं। चुपचाप कुर्सी पर से टाँगें लटकाये वहीं बैठी रहीं।

एक कामयाब पार्टी वह है, जिसमें ड्रिंक कामयाबी से चल जाएँ। शामनाथ की पार्टी सफलता के शिखर चूमने लगी। वार्तालाप उसी रौ में बह रहा था, जिस रौ में गिलास भरे जा रहे थे। कहीं कोई रुकावट न थी, कोई अड़चन न थी। साहब को व्हिस्की पसंद आयी थी। मेम साहब को पर्दे पसंद आये थे, सोफ़ा-कवर का डिज़ाइन पसंद आया था, कमरे की सजावट पसंद आयी थी। इससे बढ़कर क्या चाहिए। साहब तो ड्रिंक के दूसरे दौर में ही चुटकले और कहानियाँ कहने लग गये थे। दफ्तर में जितना रोब रखते थे, यहाँ पर उतने ही दोस्त-परवर हो रहे थे और उनकी स्त्री, काला गाउन पहने, गले में सफ़ेद मोतियों का हार, सेंट और पाउडर की महक से ओत-प्रोत, कमरे में बैठी सभी देसी स्त्रियों की आराधना का केंद्र बनी हुई थीं। बात-बात पर हँसतीं, बात-बात पर सिर हिलातीं और शामनाथ की स्त्री से तो ऐसे बातें कर रही थीं, जैसे उनकी पुरानी सहेली हों।

और इसी रौ में पीते-पिलाते साढ़े दस बज गये। वक्त गुजरता पता ही न चला।

आखिर सब लोग अपने-अपने गिलासों में से आख़िरी घूँट पीकर खाना खाने के लिए उठे और बैठक से बाहर निकले। आगे-आगे शामनाथ रास्ता दिखाते हुए, पीछे चीफ़ और दूसरे मेहमान ।

बरामदे में पहुँचते ही शामनाथ सहसा ठिठक गए। जो दृश्य उन्होंने देखा, उससे उनकी टाँगें लड़खड़ा गयीं, और क्षण-भर में सारा नशा हिरन होने लगा। बरामदे में ऐन कोठरी के बाहर माँ अपनी कुर्सी पर ज्यों-की-त्यों बैठी थीं। मगर दोनों पाँव कुर्सी की सीट पर रखे हुए, और सिर दायें से बायें और बायें से दायें झूल रहा था और मुँह में से लगातार गहरे ख़र्राटों की आवाज़ें आ रही थीं। जब सिर कुछ देर के लिए टेढ़ा होकर एक तरफ़ को थम जाता, तो खर्राटे और भी गहरे हो उठते। और फिर जब झटके से नींद टूटती, तो सिर फिर दायें से बायें झूलने लगता। पल्ला सिर पर से खिसक आया था, और माँ के झरे हुए बाल, आधे गंजे सिर पर अस्त-व्यस्त बिखर रहे थे।

देखते ही शामनाथ क्रुद्ध हो उठे। जी चाहा कि माँ को धक्का देकर उठा दें, और उन्हें कोठरी में धकेल दें, मगर ऐसा करना संभव न था,

चित्र 9.1 : बूढ़ी महिला अकेली बैठी हुई

चीफ़ और बाकी मेहमान पास खड़े थे।

माँ को देखते ही देसी अफ़सरों की कुछ स्त्रियाँ हँस दीं कि इतने में चीफ़ ने धीरे-से कहा-पूअर डियर !

माँ हड़बड़ा के उठ बैठीं। सामने खड़े इतने लोगों को देखकर ऐसी घबरायीं कि कुछ कहते न बना। झट-से पल्ला सिर पर रखती हुई खड़ी हो गयीं और ज़मीन को देखने लगीं। उनके पाँव लड़खड़ाने लगे और हाथों की उँगलियाँ थर-थर काँपने लगीं।

''माँ, तुम जाके सो जाओ, तुम क्यों इतनी देर तक जाग रही थीं ?'' और खिसियायी हुई नजरों से शामनाथ चीफ़ के मुँह की ओर देखने लगे।

चीफ़ के चेहरे पर मुस्कराहट थी। वह वहीं खड़े-खड़े बोले, ''नमस्ते!''

माँ ने झिझकते हुए, अपने में सिमटते हुए दोनों हाथ जोड़े, मगर एक हाथ दुपट्टे के अंदर माला को पकड़े हुए था, दूसरा बाहर। ठीक तरह से नमस्ते भी न कर पायीं। शामनाथ इस पर भी खिन्न हो उठे।

इतने में चीफ़ ने अपना दायाँ हाथ, हाथ मिलाने के लिए माँ के आगे किया। माँ और भी घबरा उठीं।

''माँ, हाथ मिलाओ।''

पर हाथ कैसे मिलातीं ? दायें हाथ में तो माला थी। घबराहट में माँ ने बायाँ हाथ ही साहब के दायें हाथ में रख दिया। शामनाथ दिल-ही-दिल में जल उठे। देसी अफ़सरों की स्त्रियाँ खिलखिलाकर हँस पड़ीं।

''यूँ नहीं, माँ ! तुम तो जानती हो, दायाँ हाथ मिलाया जाता है। दायाँ हाथ मिलाओ।''

मगर तब तक चीफ़ माँ का बायाँ हाथ ही बार-बार हिलाकर कह रहे थे- ''हौ डू यू डू?''

''कहो माँ, मैं ठीक हूँ, खैरियत से हूँ।''

माँ कुछ बड़बड़ायीं।

''माँ कहती हैं, मैं ठीक हूँ। कहो माँ, हौ डू यू डू!''

माँ धीरे-से सकुचाते हुए बोलीं- ''हौ डू डू...''

एक बार फिर क़हक़हा उठा।

वातावरण हल्का होने लगा। साहब ने स्थिति संभाल ली थी। लोग हँसने-चहकने लगे थे। शामनाथ के मन का क्षोभ भी कुछ-कुछ कम होने लगा था।

साहब अपने हाथ में माँ का हाथ अब भी पकड़े हुए थे, और माँ सिकुड़ी जा रही थीं। साहब के मुँह से शराब की बू आ रही थी।

शामनाथ अंग्रेज़ी में बोले, ''मेरी माँ गाँव की रहनेवाली हैं। उमर-भर गाँव में रही हैं। इसलिए आपसे लजाती हैं।''

साहब इस पर खुश नजर आए। बोले, ''सच? मुझे गाँव के लोग बहुत पसंद हैं, तब तो तुम्हारी माँ गाँव के गीत और नाच भी जानती होंगी?'' चीफ़ खुशी से सिर हिलाते हुए माँ को टिकटिकी बाँधे देखने लगे।

''माँ, साहब कहते हैं, कोई गाना सुनाओ। कोई पुराना गीत, तुम्हें तो कितने ही याद होंगे।''

माँ धीरे-से बोली, ''मैं क्या गाऊँगी, बेटा ! मैंने कब गाया है ?''

''वाह, माँ ! मेहमान का कहा भी कोई टालता है ?''

''साहब ने इतनी रीझ से कहा है, नहीं गाओगी, तो साहब बुरा मानेंगे।''

''मैं क्या गाऊँ, बेटा, मुझे क्या आता है ?''

''वाह ! कोई बढ़िया टप्पे सुना दो। दो पत्तर अनाराँ दे...''

देसी अफ़सर और उनकी स्त्रियों ने इस सुझाव पर तालियाँ पीटीं। माँ कभी दीन दृष्टि से बेटे के चेहरे को देखतीं, कभी पास खड़ी बहू के चेहरे को।

इतने में बेटे ने गंभीर आदेश-भरे लहजे में कहा, ''माँ !''

इसके बाद हाँ या ना का सवाल ही न उठता था। माँ बैठ गयीं और क्षीण, दुर्बल, लरज़ती आवाज़ में एक पुराना विवाह का गीत गाने लगीं-

हरिया नी माये, हरिया नी भैणे

हरिया ते भागी भरिया है!

देसी स्त्रियाँ खिलखिला के हँस उठीं। तीन पंक्तियाँ गा के माँ चुप हो गयी।

बरामदा तालियों से गूँज उठा। साहब तालियाँ पीटना बंद ही न करते थे। शामनाथ की खीज प्रसन्नता और गर्व में बदल उठी थी। माँ ने पार्टी में नया रंग भर दिया था।

तालियाँ थमने पर साहब बोले, ''पंजाब के गाँवों की दस्तकारी क्या है ?''

शामनाथ खुशी में झूम रहे थे। बोले, ''ओ, बहुत कुछ साहब ! मैं आपको एक सेट उन चीज़ों का भेंट करूँगा। आप उन्हें देखकर खुश होंगे।''

मगर साहब ने सिर हिलाकर अंग्रेज़ी में फिर पूछा, ''नहीं, मैं दुकानों की चीज़ नहीं माँगता। पंजाबियों के घरों में क्या बनता है, औरतें खुद क्या बनाती हैं?''

शामनाथ कुछ सोचते हुए बोले, ''लड़कियाँ गुड़ियाँ बनाती हैं, औरतें फुलकारियाँ बनाती हैं।''

''फुलकारी क्या है ?''

शामनाथ फुलकारी का मतलब समझाने की असफल चेष्टा करने के बाद माँ को बोले, ''क्यों, माँ, कोई पुरानी फुलकारी घर में है ?''

माँ चुपचाप अंदर गयीं और अपनी पुरानी फुलकारी उठा लायीं।

टिप्पणी

साहब बड़ी रुचि से फुलकारी देखने लगे। पुरानी फुलकारी थी, जगह-जगह से उसके तागे टूट रहे थे और कपड़ा फटने लगा था। साहब की रुचि को देखकर शामनाथ बोले, ''यह फटी हुई है, साहब, मैं आपको नयी बनवा दूँगा। माँ बना देंगी। क्यों, माँ, साहब को फुलकारी बहुत पसंद है, इन्हें ऐसी ही फुलकारी बना दोगी न?

माँ चुप रहीं। फिर डरते-डरते धीरे-से बोली, ''अब मेरी नज़र कहाँ है, बेटा ? बूढ़ी आँखें क्या देखेंगी?''

मगर माँ का वाक्य बीच ही में तोड़ते हुए शामनाथ साहब को बोले, ''वह ज़रूर बना देंगी। आप उसे देखकर खुश होंगे।''

साहब ने सिर हिलाया, धन्यवाद किया और हल्के-हल्के झूमते हुए खाने की मेज की ओर बढ़ गए। बाकी मेहमान भी उनके पीछे-पीछे हो लिए।

जब मेहमान बैठ गए और माँ पर से सबकी आँखें हट गयीं, तो माँ धीरे-से कुर्सी पर से उठीं, और सबसे नज़रें बचाती हुई अपनी कोठरी में चली गयीं।

मगर कोठरी में बैठने की देर थी कि आँखों से छल-छल आँसू बहने लगे। वह दुपट्टे से बार-बार उन्हें पोंछतीं पर वह बार-बार उमड़ आते, जैसे बरसों का बाँधा तोड़कर उमड़ आए हों। माँ ने बहुतेरा दिल को समझाया, हाथ जोड़े, भगवान का नाम लिया, बेटे के चिरायु होने की प्रार्थना की, बार-बार आँखें बंद कीं, मगर आँसू बरसात के पानी की तरह जैसे थमने में ही न आते थे।

आधी रात का वक्त होगा। मेहमान खाना खाकर एक-एक करके जा चुके थे। माँ दीवार से सटकर बैठी आँखें फाड़े दीवार को देखे जा रही थीं। घर के वातावरण में तनाव ढीला पड़ चुका था। मुहल्ले की निस्तब्धता शामनाथ के घर पर भी छा चुकी थी, केवल रसोई में प्लेटों के खनकने की आवाज आ रही थी। तभी सहसा माँ की कोठरी का दरवाज़ा जोर से खटकने लगा।

''माँ, दरवाज़ा खोलो।''

माँ का दिल बैठ गया। हड़बड़ाकर उठ बैठीं। क्या मुझसे फिर कोई भूल हो गयी? माँ कितनी देर से अपने-आपको कोस रही थीं कि क्यों उसे नींद आ गई, क्यों वह ऊँघने लगी। क्या बेटे ने अभी तक क्षमा नहीं किया? माँ उठीं और काँपते हाथों से दरवाज़ा खोल दिया।

दरवाजा खुलते ही शामनाथ झूमते हुए आगे बढ़ आये और माँ को आलिंगन में भर लिया।

''ओ अम्मी ! तुमने तो आज रंग ला दिया ! साहब तुमसे इतना खुश हुआ कि क्या कहूँ। ओ अम्मी ! अम्मी !''

माँ की छोटी-सी काया सिमटकर बेटे के आलिंगन में छिप गई। माँ की आँखों में फिर आँसू आ गए। उन्हें पोंछती हुई धीरे-से बोली, ''बेटा, तुम मुझे हरिद्वार भेज दो। मैं कबसे कह रही हूँ।''

शामनाथ का झूमना सहसा बंद हो गया और उनकी पेशानी पर फिर तनाव के बल पड़ने लगे। उनकी बाँहें माँ के शरीर पर से हट आयीं।

''क्या कहा, माँ? यह कौन-सा राग तुमने फिर छेड़ दिया?''

शामनाथ का क्रोध बढ़ने लगा था, बोलते गये-''तुम मुझे बदनाम करना चाहती हो, ताकि दुनिया कहे कि बेटा माँ को अपने पास नहीं रख सकता।''

''नहीं बेटा, अब तुम अपनी बहू के साथ जैसा मन चाहे रहो। मैंने अपना खा-पहन लिया। अब यहाँ क्या करूँगी। जो थोड़े दिन ज़िंदगानी के बाकी हैं, भगवान का नाम लूँगी। तुम मुझे हरिद्वार भेज दो!''

''तुम चली जाओगी, तो फुलकारी कौन बनाएगा? साहब से तुम्हारे सामने ही फुलकारी देने का इकरार किया है।''

''मेरी आँखें अब नहीं हैं, बेटा, जो फुलकारी बना सकूँ। तुम कहीं और से बनवा लो। बनी-बनायी ले लो।''

''माँ, तुम मुझे धोखा देके यूँ चली जाओगी। मेरा बनता काम बिगाड़ोगी? जानती नहीं, साहब खुश होगा, तो मुझे तरक्की मिलेगी!''

माँ चुप हो गयीं। फिर बेटे के मुँह की ओर देखती हुई बोलीं- ''क्या तेरी तरक्की होगी? क्या साहब तेरी तरक्की कर देगा? क्या उसने कुछ कहा है?''

''कहा नहीं, मगर देखती नहीं, कितना खुश गया है। कहता था, जब तेरी माँ फुलकारी बनाना शुरू करेंगी, तो मैं देखने आऊँगा कि कैसे बनाती हैं। जो साहब खुश हो गया, तो मुझे इससे बड़ी नौकरी भी मिल सकती है, मैं बड़ा अफ़सर बन सकता हूँ।

माँ के चेहरे का रंग बदलने लगा, धीरे-धीरे उसका झुर्रियों-भरा मुँह खिलने लगा, आँखों में हल्की-हल्की चमक आने लगी।

''तो तेरी तरक्की होगी, बेटा?''

''तरक्की यूँ ही हो जायेगी ? साहब को खुश रखूँगा, तो कुछ करेगा, वर्ना उसकी ख़िदमत करनेवाले और थोड़े हैं?''

''तो मैं बना दूँगी, बेटा, जैसे बन पड़ेगा, बना दूँगी।''

और माँ दिल-ही-दिल में फिर बेटे के उज्ज्वल भविष्य की कामनाएँ करने लगीं और मिस्टर शामनाथ, ''अब सो जाओ, माँ'' कहते हुए, तनिक लड़खड़ाते हुए अपने कमरे की ओर घूम गये।

बोध प्रश्न 9.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. चीफ़ के आने पर शामनाथ ने अपनी माँ को कहाँ छिपाया–

(क) कुर्सी के पीछे (ख) माँ की कोठरी में

(ग) अलमारी के पीछे (घ) माँ की सहेली के घर

2. ''शामनाथ और उसकी धर्मपत्नी को पसीना पोंछने की फुर्सत न थी''– इसका अर्थ है–

(क) शामनाथ सिगरेट-पर-सिगरेट फूँक रहे थे

(ख) वे बहुत चिंतित थे

(ग) वे बहुत व्यस्त थे

(घ) वे एक कमरे से दूसरे कमरे में आ-जा रहे थे

3. माँ के द्वारा उसे हरिद्वार भेजने के अनुरोध पर शामनाथ क्रोधित हो जाता है, क्योंकि–

(क) वह माँ से अत्यंत प्रेम करता है

(ख) उसे लोक लाज का भय है।

(ग) उसे लगा कि वह माँ से फुलकारी न बनवा सकेगा।

(घ) माँ पर खर्च बढ़ जाएगा।

9.2 आइए समझें

'चीफ़ की दावत' कहानी के प्रमुख चरण

आप पढ़ चुके हैं कि शामनाथ के घर पर चीफ़ की दावत है। यह पूरी कहानी इस अवसर पर घर के सभी सदस्यों के व्यवहार के माध्यम से खुद को अभिव्यक्त करती है। आइए अब कहानी की घटनाओं को जानते हैं :

- चीफ़ की दावत के लिए तैयारी जोरों से हो रही थी। उपयोगी सामान; जैसे- कुर्सियाँ, नैपकिन, फूल बरामदे में लाए गए। फालतू सामान छिपाया जाने लगा।
- माँ को लेकर लोग चिंतित हो गए और विचार करने लगे कि माँ का व्यवहार, पहनावा कैसा हो?
- पार्टी के दौरान मेहमान जब भोजन के लिए उठे तब कुर्सी पर खर्राटे लेती माँ को देखकर उनका उपहास उड़ाने लगे।
- माँ को जबरन गाने के लिए और फुलकारी बनाने के लिए कहा गया जिससे वे बहुत आहत थीं।
- जब माँ हरिद्वार जाने का अनुरोध करती हैं तो शामनाथ मना कर देता है।

टिप्पणी

- शामनाथ को माँ से फुलकारी बनवानी है इसलिए वह माँ पर भावनात्मक दबाव बनाता है।
- माँ बेटे की तरक्की होने और अफसर बनने के लोभ में फुलकारी बनाने पर राज़ी हो जाती हैं।

आइए अब कहानी के तत्त्वों के आधार पर इस पाठ को समझने का प्रयास करते हैं–

कहानी के तत्त्वों के आधार पर समीक्षा

कहानी के तत्त्व

- कथावस्तु
- देशकाल और वातावरण
- चरित्र-चित्रण
- संवाद योजना
- भाषा एवं शैली
- उद्देश्य

(क) कथावस्तु

'चीफ़ की दावत' कहानी की कथावस्तु तीन भागों में विभाजित की जा सकती है। प्रथम भाग में शामनाथ के चीफ़ के लिए दावत की तैयारियाँ की जा रही हैं। सजावट का सामान सही जगह पर लगाया जा रहा है। शराब का भी प्रबंध किया गया है। अवांछनीय सामान छिपाया जा रहा है। ऐसे में शामनाथ और उनकी पत्नी को माँ को लेकर मन में दुविधा है कि माँ का क्या किया जाए? चूँकि बूढ़ी माँ शामनाथ की जीवन-शैली से मेल नहीं खाती, उसका होना शामनाथ को हीनता-बोध से भरता है, इसलिए उसे छिपाए जाने के विकल्प खोजे जाने लगे। माँ को सहेली के घर नहीं भेजा जा सकता क्योंकि इससे सहेली, फिर से माँ से मिलने आने लगेगी। जल्दी खाना खिलाकर कोठरी में नहीं भेजा जा सकता, क्योंकि माँ सोते हुए खर्राटे लेती है। अंतत: समाधान निकाला गया और माँ को ताकीद की गई कि वह कुर्सी पर सलीके से बैठी रहेगी।

कहानी के दूसरे भाग में पार्टी के आयोजन का वर्णन है। शामनाथ के साहब को शराब पसंद आई और मेम साहब को घर की सजावट। चुटकुलों, कहानियों का सिलसिला चल रहा था। ड्रिंक्स का दौर रात साढ़े दस तक चलता रहा। जब मेहमान खाना खाने बरामदे में आए तो देखा माँ कुर्सी पर ज्यों-की-त्यों बैठी गहरे खर्राटे ले रही थीं। वह हड़बड़ाकर जग गई और चीफ़ के अभिवादन का सलीके से उत्तर नहीं दे पाई और सभी ने उसका उपहास उड़ाया। चीफ़ को खुश करने के लिए माँ को जबरन गीत गाना पड़ा। सभी खुश हो गए। चीफ़ को और अधिक प्रभावित करने के उद्देश्य से शामनाथ माँ की पुरानी फुलकारी दिखाता है और आश्वासन देता है कि वह माँ से फुलकारी बनवाकर चीफ़ को भेंट करेगा। माँ की नज़र कमज़ोर है। अपनी लाचारी और बेटे की संवेदनहीनता से आहत होकर माँ अपनी कोठरी में आकर बहुत रोती है।

कथा के तीसरे भाग में दावत खत्म हो जाने के बाद का वर्णन है। बेटे के निर्मम व्यवहार के कारण माँ की आँखों से नींद ओझल हो चुकी थी। घर का वातावरण यद्यपि शांत था, परंतु माँ का हृदय व्यथित था। शामनाथ ने माँ की कोठरी का दरवाज़ा खटखटाया तो माँ घबरा उठी कि उससे कोई भूल तो नहीं हो गई।

शामनाथ खुश होकर माँ को गले लगा लेता है। माँ खुद को हरिद्वार भेजने के लिए कहती है। इस पर शामनाथ क्रोधित हो जाता है और उसे लगता है कि माँ चली जाएगी तो फुलकारी कौन बनाएगा और मेरी तरक्की कैसे होगी? वह माँ को कोसने लगता है। बेटे के व्यवहार से माँ दुखी है लेकिन उसकी तरक्की की बात सुनकर, वह फुलकारी बनाने के लिए तैयार हो जाती है और बेटे के उज्ज्वल भविष्य की कामनाएँ करती है।

पाठगत प्रश्न 9.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'चीफ़ की दावत' की कथावस्तु का केंद्रीय बिंदु है–

   (क) दावत का आयोजन　　(ख) चीफ़ द्वारा फुलकारी का अनुरोध

   (ग) माँ की करुण स्थिति　　(घ) शामनाथ की पदोन्नति की लालसा

2. कहानी के अंत में माँ सुनकर प्रसन्न हो जाती है–

   (क) बेटे की तरक्की की बात　　(ख) फुलकारी बनाने की बात से

   (ग) बेटे के गले लगाने से　　(घ) हरिद्वार जाने की बात से

(ख) देशकाल एवं वातावरण

जब भी आप कोई कहानी पढ़ते हैं तो आप उसकी पृष्ठभूमि और परिस्थिति को जानना चाहते हैं। आइए इस कहानी के देशकाल एवं वातावरण को जानने का प्रयत्न करते हैं। 'चीफ़ की दावत' तब लिखी गई थी जब भारत को स्वतंत्र हुए बहुत अधिक समय नहीं हुआ था। ग्रामों से नगरों की ओर पलायन हो रहा था। नवनिर्मित मध्यवर्ग उच्चवर्ग में शामिल होने के लिए पूरी तरह से तत्पर था। स्वतंत्र होने के बाद बावजूद मानसिकता परतंत्र ही थी। नई पीढ़ी विदेशी जीवन-शैली को अपनाने लगी थी और अपने पारिवारिक मूल्यों को तिलांजलि देने लगी थी। विदेशी खान-पान, रहन-सहन, भाषा, शिष्टाचार ही मानो आधुनिकता के पर्याय बन चुके थे। कहानी में शामनाथ ने दावत का आयोजन किया था जिसमें अफ़सरों और उनकी पत्नियों को आमंत्रित किया गया था। कहानी में दर्शाया गया है कि युवा पीढ़ी विदेशी जीवन-शैली से काफ़ी प्रभावित है और अपने घर की वृद्ध पीढ़ी को फालतू सामान की भाँति छिपाना चाहती है। माँ की माला, खड़ाऊँ आदि शामनाथ में खीज उत्पन्न करते हैं। इनमें मूल्यगत संस्कारों

के प्रति कोई आग्रह नहीं है। आधुनिक कहलाने और तरक्क़ी की चाह में अपने माँ-बाप के सिखाए मूल्यों और संस्कारों को त्याग रही है और महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति में लगी है।

पाठगत प्रश्न 9.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'चीफ़ की दावत' कहानी में अभिव्यक्ति है-

   (क) रूढ़िवादी मानसिकता की (ख) पराधीन मानसिकता की

   (ग) पारिवारिक मूल्यों की (घ) नगर की ओर पलायन की

2. शामनाथ की मुख्य चिंता है–

   (क) पड़ोस से संबंधित (ख) माँ से संबंधित

   (ग) पत्नी से संबंधित (घ) तरक्क़ी से संबंधित

(ग) चरित्र-चित्रण

कथावस्तु को आगे बढ़ाने का दायित्व चरित्रों का होता है। ये चरित्र कहानी में वांछनीय प्रभाव उत्पन्न करते हैं। इस कहानी में चार प्रमुख चरित्र हैं : माँ, शामनाथ, शामनाथ की पत्नी और चीफ़।

इनमें माँ और शामनाथ मुख्य चरित्र हैं और शामनाथ की पत्नी और चीफ़ गौण चरित्र। कहानी के केंद्र में शामनाथ और माँ हैं। शामनाथ की पत्नी और चीफ़ उचित समय पर कहानी में उपस्थित होते हैं और अपनी भूमिका निभाकर कहानी की मुख्य धारा से हट जाते हैं।

आइए अब हम कहानी के इन पात्रों की चरित्रगत विशेषताएँ जानने का प्रयत्न करते हैं।

शामनाथ में आधुनिक बनने की अत्यधिक लालसा है। इसीलिए उसे श्री शामनाथ न कहकर मिस्टर शामनाथ कहा गया है। चूँकि उसने अपने आर्थिक स्तर को बेहतर करने के लिए कड़ी मेहनत की है इसलिए वह खुद को आधुनिक दिखाने के लिए भी पूरी तरह से तत्पर है। घर का संचालन उसी के हाथ में है। खूँटियाँ कमरों में कहाँ लगाई जाएँ, बिस्तर कहाँ पर बिछे, किस रंग के पर्दे लगाए जाएँ, श्रीमती कौन-सी साड़ी पहनें आदि के बारे में उसका निर्णय ही प्रमुख है। वह चाटुकार अधिकारी है। कहानी का शीर्षक उसकी इस प्रवृत्ति का परिचायक है। वह मेहनत की अपेक्षा अपने चीफ़ को दावत पर आमंत्रित कर, महँगी शराब पिलाकर, तरक्की पाना चाहता है। चीफ़ की खुशामद करने में वह अपने संस्कार तक भूल जाता है।

शामनाथ एक संवेदनहीन और शुष्क व्यक्ति है। वह भूल जाता है कि जिस माँ ने उसे अपने गहने बेच कर, इतनी कठिनाइयाँ उठाकर पाला है, उस ममतामयी माँ के प्रति उसका व्यवहार

अत्यंत शुष्क है। वह फालतू सामान की भाँति माँ को भी इस डर से कहीं छिपाना चाहता है, कि कहीं उसकी छवि खराब न हो जाए। उसे माँ की सहेली पसंद नहीं। माँ की वेशभूषा पसंद नहीं, माँ का बैठने का तरीका पसंद नहीं। उसे चिंता है कि अगर वह खर्राटे लेने लगेगी तो उसे मेहमानों के सामने शर्मिंदगी होगी। उसे माँ के नंगे पाँव घूमने से और खड़ाऊँ पहनने से भी परेशानी है।

वह आधुनिक, सभ्य और शिष्ट होने का दिखावा करने के साथ-साथ अपनी संपन्नता का प्रदर्शन करता है। इसीलिए वह माँ से पूछता है कि सोने की चूड़ियाँ कहाँ हैं और वह उन्हें पहन ले ताकि चीफ़ व अन्य मेहमानों को उसकी समृद्धि का आभास मिले।

शामनाथ पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित है। शामनाथ का माँ के प्रति व्यवहार असंवेदनशील है। माँ उसकी प्रतिक्रिया से भयभीत रहती है। घर में माँ असहज रहती है। वह अपनी सुविधा के लिए माँ के किसी से मिलने पर प्रसन्न नहीं होता, और उत्तरदायित्व का भी अनुभव नहीं करता। माँ से छुटकारा पाना चाहता है और पत्नी पर खीझ निकालते हुए कहता है– ''अच्छी-भली यह भाई के पास जा रही थी। तुमने यूँ ही खुद अच्छा बनने के लिए बीच में टाँग अड़ा दी!'' पत्नी के उत्तर देने पर शामनाथ चुप रहा, क्योंकि उसके अनुसार यह मौका बहस का न था।

माँ ने गहने बेचकर उसे पढ़ाया। उसे इस त्याग का कोई अहसास नहीं है।

वह माँ के प्रति अमानवीय व्यवहार रखता है। माँ को आदर-सम्मान की अपेक्षा शामनाथ से सिर्फ़ हुक्म मिलते हैं। माँ का जी चाहा कि चुपचाप पिछवाड़े विधवा सहेली के घर चली जाए। मगर बेटे के 'हुक्म' को कैसे टाल सकती है। माँ क्या पहनेगी, कैसे बैठेगी, क्या बोलेगी, क्या नहीं करेगी इस बारे में लगातार शामनाथ आदेश देता है। इससे पता चलता है, उसमें मानवीय संस्कार और भावनाएँ लुप्त हो गई हैं।

माँ

शामनाथ की माँ इस कहानी का मुख्य चरित्र है। वह छोटे कद-काठी की वृद्ध महिला है। आँखें धुँधली हैं और सिर के आधे बाल झड़ गए हैं। चीफ़ की दावत, घर का फालतू सामान अलमारियों के पीछे और पलंगों के नीचे छिपाया जाने लगा तब शामनाथ के सामने एक समस्या आ गई कि माँ का क्या होगा?' माँ शुद्ध शाकाहारी धार्मिक महिला है। माँ घरेलू कामों में हाथ नहीं बँटा पाती इसलिए उसे कोई नहीं पूछता। जब घर में माँस-मच्छी बनता है तब वह भोजन नहीं करती। उसकी इस आदत का सम्मान नहीं होता। दुर्भाग्यवश माला जपने वाली, खड़ाऊँ पहनने वाली माँ लज्जा का कारण बन जाती है।

वह शामनाथ का हर उचित-अनुचित आदेश मानती है– चाहे जल्दी न सोने का हो, कुर्सी पर बैठने का तरीका हो, कपड़े पहनने का हो, चीफ़ के अभिवादन का हो या गीत गाने का हो। इसके साथ ही क्षीण आँखों, काँपते हाथों से बेटे की तरक्की के लिए फुलकारी बनाने का हो, वह सब मान जाती है।

माँ ममतामयी महिला है। माँ ने शामनाथ को जन्म दिया, ममता से, स्नेह से उसे पाला, उसकी शिक्षा एवं रोजगार के लिए निरंतर प्रयत्न किए और अपना तन, मन, धन सब न्यौछावर कर दिया। अपने गहने तक बेच डाले ताकि शामनाथ का सामाजिक, आर्थिक स्तर बढ़ा सके। लेकिन उसे सब उपकारों के विपरीत पुत्र की कृतघ्नता ही मिलती है।

बेटे के रूखे, अमानवीय व्यवहार से निरंतर दुखी रहने वाली माँ अपने पुत्र को चिरायु होने और तरक्की पाने की कामना करती है। पुत्र जब चीफ़ के लिए फुलकारी बनाने के लिए कहता है तो वह सब भूलकर फुलकारी बनाने के लिए तुरंत तैयार हो जाती है।

(घ) संवाद-योजना

कहानी में संवाद-योजना की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जिससे कहानी में रोचकता और प्रभावशीलता बनी रहती है और घटनाओं का क्रम आगे बढ़ता है।

इस पृष्ठभूमि में यदि हम 'चीफ़ की दावत' कहानी के संवादों का विश्लेषण करें तो स्पष्ट होता है कि इस कहानी के संवाद इसके मुख्य उद्देश्य को उद्घाटित करते हैं।

'चीफ़ की दावत' कहानी में मध्यवर्ग में पारिवारिक संबंधों की उपेक्षा, आधुनिकता के प्रदर्शन की प्रवृत्ति और स्वार्थी व्यवहार को लेखक ने अत्यंत सूक्ष्मता से अंकित किया है। कहानी के संक्षिप्त संवादों से पात्रों की मन:स्थितियाँ दर्शायी गई हैं।

आइए, कुछ उदाहरण देखते हैं-

कहानी का पहला संवाद ही इसके मूल बिंदु पर ला खड़ा करता है जब शामनाथ अंग्रेज़ी में अपनी पत्नी से पूछता है माँ का क्या होगा? अपनी झूठी प्रदर्शनप्रियता के कारण, 'आधुनिक पार्टी में बेमेल-सी लग रही माँ को कहाँ छिपाएँ', यह समस्या है।

इससे आगे पति-पत्नी के संवाद माँ की करुण स्थिति का चित्र खींचने में पूर्णतया सक्षम हैं।

इसी तरह यह संवाद देखिए–

'माँ, आज तुम खाना जल्दी खा लेना। मेहमान लोग साढ़े सात बजे आ जाएँगे।'

'आज मुझे खाना नहीं खाना है, बेटा, तुम जानते तो हो, माँस-मछली बने, तो मैं कुछ नहीं खाती।'

'जैसे भी हो, अपने काम से जल्दी निबट लेना!'

इसी तरह कहानी के अनेक संवादों से शामनाथ के चारित्रिक अवगुण प्रकट होते हैं। माँ की लाचारी, करुण स्थिति, उसके बलिदानों के प्रति शामनाथ की कृतघ्नता साफ़ झलकती है।

'चीफ़ की दावत' कहानी के संवादों की प्रमुख विशेषता है– संक्षिप्तता। संवाद छोटे-छोटे हैं और यही कारण है कि अपेक्षित प्रभाव डालने में पूर्णतया सक्षम हैं।

(ङ) उद्देश्य

प्रत्येक लेखक की रचना के पीछे उसका कोई-न-कोई उद्देश्य अवश्य होता है। भीष्म साहनी भी इस कहानी के माध्यम से पाठकों को संदेश देना चाहते हैं कि मध्यवर्गीय लोग स्वार्थपरता, दिखावटीपन, अर्थलोलुपता को अपना रहे हैं। वे अपने माँ-बाप के बलिदानों के प्रति कृतघ्न हैं और जहाँ भी अवसर मिलता है। यह पीढ़ी पुरानी पीढ़ी का उपयोग करने में, शोषण करने में हिचकती नहीं है। पारिवारिक मूल्यों को दरकिनार करती हुई यह पीढ़ी आत्मप्रेम से ग्रस्त है। इसमें पुरानी पीढ़ी के प्रति कर्त्तव्यबोध लुप्त है। इसका लक्ष्य केवल निजी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति है और उसके लिए वह कुछ भी करने को तैयार है। इस प्रकार 'चीफ़ की दावत' कहानी का मुख्य उद्देश्य पारिवारिक जीवन-मूल्यों के विघटन को स्पष्ट करना है। इस कहानी के एक महत्वपूर्ण संदेश की ओर भी आपका ध्यान जाना चाहिए। वह यह कि शामनाथ उसे छिपा रहा है जो दिखाया जाना चाहिए। माँ फुलकारी बनाना जानती है जो भारतीय कलाओं में एक है। इस तरह से वह भारतीयों की अस्मिता का रूप है। हीनता-बोध के कारण शामनाथ इसकी उपेक्षा करता है, जबकि इसे चीफ़ पहचान रहा है।

(च) भाषा एवं शैली

कहानी की भाषा पात्रों के शैक्षिक एवं सामाजिक स्तर के अनुकूल है। मुख्य रूप से इसमें नगरीय बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया गया है। इसमें तदभव शब्दों का अधिक प्रयोग हुआ है। साथ ही अंग्रेजी और उर्दू शब्द भी प्रयुक्त हुए हैं। उर्दू शब्दों तथा तद्भव शब्दों का अधिक प्रयोग हुआ है।

उर्दू : मुकम्मल, इंतजाम, फालतू, बेशक।

अंग्रेज़ी : नैपकिन, मिस्टर, ड्रेसिंग गाउन, सिगरेट।

तद्भव : लड़खड़ाना, बरसात आदि।

इसी तरह शामनाथ को भी श्रीमान न कहकर मिस्टर कहा गया है जो शामनाथ की तथा कथित आधुनिकता के प्रति लालसा को दर्शाता है। माँ उस पुरानी पीढ़ी की प्रतीक है जिसने अगली पीढ़ी की शिक्षा और रोजगार के लिए हर तरह से त्याग किया, परंतु पारिवारिक मूल्यों को स्थानांतरित नहीं कर पायी।

इसी तरह शामनाथ मध्यवर्ग के उस पीढ़ी का प्रतीक है जो आधुनिक बनने और तरक्की पाने के लिए अपनी परंपराओं, पारिवारिक मूल्यों को तिलांजलि देने से भी पीछे नहीं हटती।

इस प्रकार 'चीफ़ की दावत' कहानी की भाषा-शैली कहानी की कथा की विश्वसनीयता, पात्रों के चरित्र और कहानी के उद्देश्य को प्रभावशाली बनाने में पूर्णतया सफल हुई है।

पाठगत प्रश्न 9.3

उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. शामनाथ के व्यक्तित्व की विशेषता नहीं है–
   (क) मध्यवर्गीय मानसिकता
   (ख) परंपरा के प्रति आदर भाव
   (ग) स्वार्थी होना
   (घ) प्रदर्शन करने वाला होना
2. शामनाथ की माँ की मुख्य चिंता है–
   (क) अपने गहनों का न मिलना
   (ख) शामनाथ की तरक्की
   (ग) फुलकारी बनाना न आना
   (घ) शामनाथ द्वारा अपमानित किया जाना

क्रियाकलाप 9.2

भीष्म साहनी का सर्वाधिक चर्चित उपन्यास 'तमस' पढ़िए और जानिए कि देश की प्रगति, उन्नति के लिए सांप्रदायिक सौहार्द कितना आवश्यक है। इस महत्वपूर्ण कार्य में आपकी क्या भूमिका हो सकती है? संक्षेप में प्रस्तुत कीजिए।

9.3 आपने क्या सीखा (चित्रात्मक प्रस्तुति)

कहानी के तत्त्व

कथावस्तु	देशकाल और वातावरण	चरित्र-चित्रण	संवाद	भाषा-शैली	उद्देश्य
-मेहमान के आगमन की तैयारी -पार्टी का आयोजन -माँ का तिरस्कार और उसकी पीड़ा, बच्चे के लिए सब सहन करने को तैयार	-नई पीढ़ी की विदेशी शैली -परिवार का बिखराव	-माँ -शामनाथ -शामनाथ की पत्नी -चीफ़	-रोचक एवं प्रभावी -उद्देश्यपरक -संक्षिप्त -व्यंग्ययुक्त	-नगरीय बोलचाल की भाषा -तद्भव शब्दों का अधिक प्रयोग -शैली उद्देश्य के अनुसार	-युवा पीढ़ी की स्वार्थपरता, दिखावटीपन और अर्थलोलुपता का उद्घाटन -पारिवारिक मूल्यों का विघटन

9.4 सीखने के प्रतिफल

- अपने परिवेशगत अनुभवों पर अपनी स्वतंत्र और स्पष्ट राय व्यक्त करते हैं।
- कहानी को अपनी समझ के आधार पर नए रूप में प्रस्तुत करते हैं।
- प्राकृतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मुद्दों, घटनाओं के प्रति अपनी प्रतिक्रिया को बोलकर/लिखकर व्यक्त करते हैं।
- भाषा-कौशलों के माध्यम से जीवन-कौशलों को आत्मसात करते हैं और अभिव्यक्त करते हैं।
- सामाजिक, शारीरिक एवं मानसिक रूप से चुनौती प्राप्त समूहों के प्रति संवेदनशीलता एवं समानुभूति लिखकर अभिव्यक्त करते हैं।

9.5 योग्यता विस्तार

लेखक परिचय

भीष्म साहनी हिंदी साहित्य के प्रमुख साहित्यकार के रूप में जाने जाते हैं। उनका जन्म रावलपिंडी में 1915 में हुआ। उन्होंने लाहौर से अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. किया और पंजाब विश्वविद्यालय से पी-एच.डी. की। विभाजन के बाद उन्होंने भारत आकर समाचारपत्रों में कार्य किया। बाद में वे दिल्ली विश्वविद्यालय में साहित्य के प्रोफ़ेसर हुए। उन्हें पंजाबी, हिंदी, संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी का बहुत अच्छा ज्ञान था। भीष्म साहनी को प्रेमचंद की परंपरा का अग्रणी लेखक माना जाता है। वे सदैव मानवीय मूल्यों के पक्षधर रहे। उनकी कहानियों में मध्यवर्ग के द्वन्द्व हैं तो निम्नवर्ग की संघर्षशीलता भी प्रखरता से अभिव्यक्त हुई है। उन्होंने मुख्य रूप से उपन्यासों, कहानियों और नाटकों की रचना की।

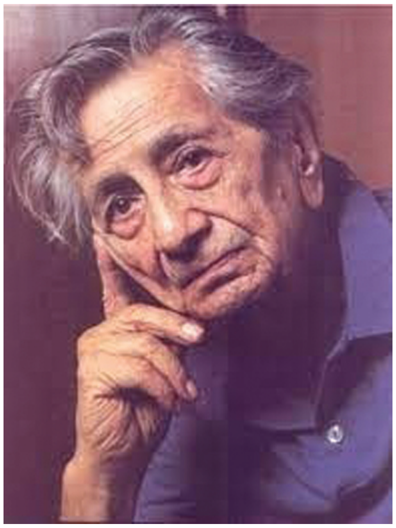

चित्र 9.2 : भीष्म साहनी

उनके सर्वाधिक चर्चित उपन्यास 'तमस' पर 1975 में साहित्य अकादमी पुरस्कार भी मिला। उनके अन्य उपन्यास झरोखे, मायादास की माड़ी आदि प्रमुख हैं। 'तमस' हिंसा और घृणा से उत्पन्न सांप्रदायिकता की भयावहता और देश के विभाजन के समय मृत्यु और विनाश का करुण चित्र खींचती है। उन्हें 1975 में एफ्रो-एशियाई लेखकों के संघ द्वारा लोटस अवार्ड दिया गया। 1983 में सोवियतलैंड नेहरू पुरस्कार दिया गया। साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान के लिए 1998 में पद्मभूषण से सम्मानित किया गया।

9.6 पाठांत प्रश्न

1. घर पर दावत के दौरान शामनाथ अपनी माँ को चीफ़ से क्यों छुपाना चाहता था?
2. इस कहानी का कोई और अंत भी हो सकता है? संक्षेप में प्रस्तुत कीजिए।
3. "माँ का क्या होगा?" यह संक्षिप्त संवाद पूरी कहानी के मर्म को उद्घाटित करता है। टिप्पणी कीजिए।
4. शामनाथ चीफ़ को दावत पर क्यों आमंत्रित करता है? स्पष्ट कीजिए।
5. 'अब घर का फालतू सामान आलमारियों के पीछे और पलंगों के नीचे छिपाया जाने लगा।' यह कथन मध्यम वर्ग की किस प्रवृति की ओर इशारा करता है? स्पष्ट कीजिए।
6. माँ घर में सबसे बुजुर्ग होने के वाबजूद अपने बेटे के व्यवहार के प्रति निरंतर चिंतित क्यों रहती है?
7. कहानी के बीच-बीच में शामनाथ पत्नी से अंग्रेज़ी में बात करता है। इससे शामनाथ की व्यक्तित्व के किस पक्ष का उद्घाटन होता है?
8. 'चीफ़ की दावत' कहानी मध्यवर्गीय मानसिकता का जीवंत दस्तावेज है।' सिद्ध कीजिए।
9. 'चीफ़ की दावत' कहानी की मुख्य पात्र माँ हैं। उनके चरित्र की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
10. 'चीफ़ की दावत' कहानी की भाषा और शैली की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
11. 'चीफ़ की दावत' कहानी का मुख्य उद्देश्य क्या है, स्पष्ट कीजिए।

9.7 उत्तरमाला

बोध प्रश्न 9.1

1. (ख) 2. (ग) 3. (ग)

पाठगत प्रश्न के उत्तर

9.1	1. (ग)	2. (क)
9.2	1. (ख)	2. (घ)
9.3	1. (ख)	2. (ख)